ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 433-434

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

उत्तररामचरित में पर्यावरण तत्व

डॉ0 कुसुम लता

एसोसिएट प्रोफेसर– संस्कृत विभाग, राजकीय रज़ा स्नामकोत्तर महाविद्यालय रामपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 08.12.2019, Revised- 13.12.2019, Accepted - 17.12.2019 E-mail: - drkusumlatasingh. @gmail.com

सारांश : ***परितः आवरणं पर्यावरणम्। परितः अर्थात् चारो ओर या चतुर्दिक् परिधि में आच्छादन अथवा किसी चीज की घेरा इस प्रकार परि+आवरण इन दो शब्दों के योग से पर्यावरण पद निष्पन्न हुआ है। प्राणी मात्र के चारो ओर का जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी तथा आकाश का जो आवरण है वह पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण विशेषज्ञों के अनुसार विभिन्न आत्मनिर्भर सजीव–निर्जीव घटकों के मध्य सामंजस्य एवं पूर्णता की अवधारणा पर्यावरण है।***

पर्यावरण का निर्जीव घटक पाँच उपघटकों क्षिति (मृदा), जल, पावक (ऊर्जा), हवा/वायु तथा आकाश में विभाजित है, जबकि सजीव घटक अनेक उपघटकों में विभाजित है। प्रकृति में सजीव तथा निर्जीव दोनों का समावेश है।

सजीव घटक में मनुष्य, जीव–जन्तु व सम्पूर्ण प्राणिजगत का समावेश है। सम्पूर्ण सजीव एवं निर्जीव तत्व प्रकृति में सह–अस्तित्व एवं पारस्परिक अन्तःसम्बन्धों के आधार पर ही भूमण्डलीय–पर्यावरण का निर्माण करते हैं।

कुंजीभूत शब्द– चतुर्दिक् परिधि, आच्छादन, योग, पर्यावरण, पद, निष्पन्न, अस्तित्व, भूमण्डलीय–पर्यावरण।

जब इनमें अन्तर्विरोध या असन्तुलन असामंजस्य की स्थिति उत्पन्न होती है, तभी पर्यावरण असन्तुलन का संकट उत्पन्न होता है। किसी एक घटक में होने वाला विकारात्मक परिवर्तन अन्य सभी घटकों में भी श्रृंखलाबद्ध परिवर्तन उत्पन्न कर देता है। इनके अतिरिक्त मानव निर्मित वस्तुएँ भी पर्यावरण का अंग हैं, जिनसे हमारा जीवनचक्र सुचारूतया संचालित होता है।

सजीव घटक का प्रमुख उपघटक मनुष्य तथा प्राकृतिक पर्यावरणों में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन मनुष्य को प्रकृति से ही प्राप्त होते हैं। भोजन, आवास, वस्त्रादि के साथ ही अन्य भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य को प्रकृति पर ही निर्भर रहना पड़ता है। चतुर्दिक धरित्री जीवमात्र को आश्रय देती है। जिन पंचभौतिक तत्वों से यह मानव शरीर निर्मित है उनमें से एक के भी अभाव में जीवन का अस्तित्व नही रह सकता। वायु, वर्षा, जल, भूमि, वनस्पति, पेड़–पौधे, वन्य जीव जन्तु, सूर्य का प्रकाश, पर्वत, नदी, तालाब, झील, समुद्र, पशु–पक्षी, मानव, कीटाणु आदि सभी मिलकर पर्यावरण की संरचना करते हैं। प्रकृति में इन सबकी मात्रा और इनका घटन इस प्रकार व्यवस्थित एवं नियन्त्रित है, जिससे धरती पर अनन्तकाल से सन्तुलित जीवनधारा बहती चली आ रही है। सन्तुलित पर्यावरण ही धरती पर जीवन प्रक्रिया सुचारू रूप से संचालित करने में परमोपकारक एवं परम सहायक होता है। पर्यावरण की इसी महनीय उपयोगिता को ध्यान मे रखते हुए संस्कृत साहित्य में पर्यावरण निरूपण काव्यादि साहित्य का महत्वपूर्ण अंग माना जाता गया है।

काव्य के वर्ण्य प्रसंगों में प्रकृति वर्णन अतिमहत्वपूर्ण, प्रमुख एवं उपादेय प्रसंग है क्योंकि शुद्ध स्वस्थ पर्यावरण स्वस्थ अनामय जीवन का आधार है, प्रकृति पर्यावरण का मुख्य घटक है अतः काव्यादि में प्रकृति वर्णन का व्यापक महत्व है। प्रकृति न केवल मानव की, अपितु प्राणिमात्र का प्राणाधार है। अतः काव्य नाट्यादि में प्रकृति चित्रण प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है। काव्यों का प्रकृति वर्णन सूक्ष्मतम होता है। कवि की दृष्टि में प्रकृति के सभी अंग वर्णनीय होते हैं। भवभूति की धारणा है कि प्रकृति तो प्रकृति है। प्रकृति ईश्वर की रचना है और कवि भी ईश्वर का प्रतिरूप हैं।[1] **"कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोर्थान्व्यदधाश्वतीभ्यः समाभ्यः।"**

अतएव परमात्मा की रचना होने से प्रकृति तो स्वतः सर्वांग सुन्दर है, उसमें अलग से सुन्दर व असुन्दर का विवेक अनुचित है। सुन्दर सुसज्जित उद्यानों, वापी, तडागों तथा गम्भीर भयानक वनों, मरूभूमियों तथा पशु–पक्षियों के वर्णन में कवि की रुचि और दृष्टि निष्पक्ष और समरूप होनी चाहिए इस सैद्धान्तिक अवधारणा की दृष्टि से रूपकों में प्रकृति के यावन्मात्र रूप नाटक की प्रकृति एवं प्रसंग के अनुरूप उपस्थित हुए उन सभी का निरूपण भवभूति ने अपूर्व सफलता तथा पूर्ण रुचि और निष्ठा के साथ किया है।

महाकवि भवभूति ने प्रकृति चित्रण के लिए अवसरों/प्रसंगों का चयन पूर्ण कौशल और नैपुण्यपूर्वक किया है तथा इनका औचित्यपूर्ण युक्तियुक्त चित्रण किया है। महाकवि ने प्रकृति के समग्र रूपों का निष्पक्ष और यथार्थ

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

चित्रण प्रस्तुत किया है। दण्डकवन के भीषण स्वरूप का चित्रण दर्शनीय है– "वनप्रान्त कहीं नितान्त शान्त है, तो कहीं–कहीं भयावह पशुओं की प्रचण्ड ध्वनि से शब्दायमान है, कहीं स्वतः प्रसुप्त सर्पों के प्रश्वास से अग्नि निकल रही है, प्रायः सर्वत्र जलमग्न हैं, कहीं छोटे–छोटे गड्ढों में थोड़ा जल भरा हुआ है। प्यासे गिरगिट अजगरों के स्वेदद्रव का पान कर रहे हैं।"[2]

इतना ही नहीं महाकवि भवभूति न छोटी–छोटी पर्वतीय नदियों का परम मनोरम, रमणीय तथा सजीव वर्णन किया है। पर्वतीय नदियों का यह वर्णन ह्रदयग्राही तो है ही, साथ ही प्राकृतिक पर्यावरणीय महत्व से युक्त है– "यहाँ मतवाले पक्षियों से उपशोभित तटस्थ वानीरलताओं से युक्त, वानीरपुष्पों से सुवासित शीतल स्वच्छ जलवाली तथा श्यामवर्ण जम्बूफलों के गिरने से ध्वनित धाराओं वाली नदियाँ प्रवाहित हो रही हैं।"[3]

नदी तटों तथा पर्वतों के निकटस्थ भूतल पर रीछों, हाथियों आदि का वर्णन नितान्त नैसर्गिक, मौलिक और यथार्थ है यथा– "यहाँ बिलों में बसने वाले भालुओं के शब्द, जो प्रतिध्वनियों से गुजिंत अतएव बढ़ते हुए से प्रतीत होने वाले तथा सल्ल की लताओं का गन्ध जो हाथियों द्वारा ग्रन्थिभंजन और क्षिप्त होने से प्रादुर्भूत होकर बढ रहा है।"[4] गोदावरी नदी के गद्गद, कलकल ध्वनि से ध्वनित जलधाराओं की रमणीयता कितनी सुखद है– "गिरि कन्दराओं में कलकल निनादिनी गोदावरी के जल से युक्त तथा मेघों के आलिंगन से नीलवर्णाभ शिखर युक्त दक्षिण दिशा के यह पर्वत दृष्टिगोचर हो रहे हैं और दूसरी ओर घात प्रतिघातयुक्त चंचल तरंग कोलाहल युक्त, चंचक ऊर्मिमुखरित, गंभीर अगाध जल वाले यह पवित्र नदी संगम हैं।"[5]

इस प्रकार महाकवि भवभूति ने उत्तररामचरित में वनों, नदियों तथा पर्वतों के मौलिक प्राकृतिक स्वरूप का यथायथ वर्णन प्रस्तुत किया है जो पर्यावरणीय दृष्टि से अतिमहत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. यजुर्वेद 40/8.
2. निष्कूजस्तिमिताः क्वचित्क्वचिदपि
प्रोच्चण्डसत्त्वस्वनाः, स्वेच्छासुप्तगभीरभोग
भुजगश्वासप्रदीप्ताग्नयः। सीमानः प्रदरोदरेषु
विरलस्वल्पाम्भसो यास्वयं,
तृष्यद्भिः प्रतिसूर्यकैरजगरस्वेदद्रवः पीयते।।,
उत्तररामचरितम्, 2/16.
3. इह समदशकुन्ताक्रान्तवानीरमुक्त–
प्रसवसुरभिशीतस्वच्छतोया वहन्ति।
फलभरपरिणामश्यामजम्बूनिकुञ्ज–
स्खलनमुखरभूरिस्रोतसो निर्झरण्यः।।,
उत्तररामचरितम्, 2/20.
4. दधति कुहरभाजामत्र भल्लूकयूना– मनुरसितगुरूणि
स्तयानमूबूकृतानि। शिशिरकटुकषायः स्त्यायते
शल्लकीना–
मिभदलितविकीर्णग्रन्थिनिष्यन्दगन्धः।।,
उत्तररामचरितम्, 2/21.
5. एते ते कुहरेषु गद्गदनददगोदावरीवारयो
मेघालम्बितमौलिनीलशिखराः क्षोणीभृतो दाक्षिणाः।
अन्योन्यप्रतिघात सङ्कुलचलत्कल्लोलकोलाहलै
रूत्तालास्तु इमे गभीरपयसः पुण्याः सरित्सङ्गमाः।।,
उत्तररामचरितम्, 2/30.

*****